ü

## दिनांक 16 ग्रगस्त, 1984

सं को. वि/एफ. डी./122-84/30774.--चूकि हरियाणा के राज्यपान की राय है कि में. माईको प्रसिजन प्रोडक्टस, 4, लिक रोड फरीदाबाद, के श्रमिक श्री जगदत गर्मा तथा उस है प्रकल्य हों है मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिए य हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :--

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 को धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों वा प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-अम-68/श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गैठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों नथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुमंगत ग्रथवा संबधित सामला है के

वया श्री जगदत्त गर्मा की सेवाम्रों का समापन न्यायं चित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो ग्रह किस राहत का हकदार

है ?

स.मो.वि./एफ.डी./136-84/30781. मूर्कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दी बंगाल नैशनल टैक्सटाईल मिल्ज
(स्पीनिंग डिविजन), 14,5 मधुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्रीमती साविज्ञी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित
गामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है:

भ्रीर चृकि हरियाणा के राज्यणाल विवाद को स्थायनिर्णय हुतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए अव, अधिगिक विवाद अधिनिमिय, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राष्यपाल इसके हारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-अभ-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-अम-68-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त अधिनिमिय को धर्ग ? के अधीन गठित अप न्यायालय फरीदावाद, को विवादशस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्विधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निविष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्धकों तथा अभिक के वीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा संवंधित मामना है;

वया श्रीमति सावित्ती की सेवाग्रों का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

मं श्रो.ियः/एफ.वि./136-84/30788. चूिक हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दी बंगान नैशनल टैनसटाईल मिल्ज (स्पीनिंग जिविजन), 14/5, भयुरा रोड, फरीदाबाट, के श्रीमक श्रोमती पार्वती तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

क्रार चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को ्रीयायनिणय हेनु निदिष्ट करना बांधनीय समझते है ;

इसलिए, अब, ओद्योगिक विवाद अधिनयम, 1947 को धारा 10 की उपधारा (1) के उप-खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 ज्न, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495 जी-अम-68 अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत अधिनयम की पारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादयस्त या उससे मुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मागला न्याय निर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है श स्ववाद से मुसंगत अधना संबंधित मामला है।

का। श्रीमती पार्वती की सेवाग्री का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह विस राहत नी हकदार है?

सं.म्रो.वि./एफ.डी./136-84/30795.--चूकि हिरियाणा के राज्यपाल की राये है कि में. दी बंगाल नैधनल टैक्सटाईल मिन्ज (स्पीतिग डिविजन) 14/5 मथुरा रोड, फरीदावाद के श्रमिक श्रीयती कृष्णा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित भागने में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

ें इसलिए, अर्वे, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1)के खण्ड (ग)हारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना यं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनाक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिमुचना संा 11495-जी-शम-68शम् 57/11/245, दिनांक र परवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रदित्यम की धारा विकास प्रमान गिर्दि वर्ग न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसगत या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय के लिए निहिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिन के बीत या ता विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित

हिंगा श्रीमती किएणा की सेवाओं का समापत न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत के हकदार है ?

संग्री विश्वाहतित । 87-84/30802--च्कि तिरयाणां के राज्यणां की राम है कि मैं. फार्माकेम, एम आई.ई., बहादुरगढ़ राहतक) के शिमिक बी राना शोश तथा उसके प्रबन्धकों वे बीच इसमें इसके बाद निष्वित गामले में कोई शौद्योगिक विवाद है: शिक्ष के स्वीति के स्वीति हिर्याणां के राज्यणाल विवाद को न्याय निर्णय हेनु निविष्ट करना बांछनीय समझते है;

हमें निर्णाश्चिम होता है। प्रदान की गई प्रमास किया है। प्रदान की गई प्रमास है। के दिल्ल की गई प्रमास है। प्रदान है। प्रमास है। प्रदान है। प्रदा शिक्षा का मुख्या का प्राप्त कर किया है। उन्हें के स्वाप्त के किया के स्वाप्त के ति निवाद करते हैं जो कि उनते अवन्ध्रको तथा श्रीमक के बीच या हो। विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुनंगत या सम्बन्धित अभिमला है।

क्या अर्थि रामा की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक हैं ? तोवदि नहीं, वह किस राहत का हकदार है ?

ेस श्री विश्विम्वाला / 191-83/30809 -- विक हरियाणां के राज्यपाल, की राय है कि मैं, बाराड़ा कोपरेटिव केंडिट एण्ड सविसं ∎ सोसाइडी ■ लिल् चराडा, जिली क्रम्बाला, के श्रीनिक श्री ग्रंथों के पाल लिह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामुले. में कोई अीदोसिक विवाद है :

भौर**ेर्न्**कि हिरियाणा के राज्यपाल किवाद को न्यायनिर्णय हेनु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

्रिहेस् हेरिए मुद्दे स्रीहो। कि विवाद अधिनियम । 947 की धारा 10 की उप धारा (।) के खण्ड (ग) ढारा प्रदान की गई प्रमाधिकरतेहिए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना है. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 \* विनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायान्य अभ्वाला को विवादग्रन्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय विविद्धिकरते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा

क्रिक्र के किए कि से को सेवाओं का समापन न्यायोगित तथा ओक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सुभी ति प्रिफ.डी / 124-84/30815 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राध है कि मैं. के जी. खोसला वस्प्रेसरज, लि. हिरी है रे करीते वाद कि श्रीमक श्री रमेश गिंगे तथा उपके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में लोई श्रीद्योगिक •

<u>भोरे जेकि हरियोशा के द्राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय है तु निविध्य करना वांछनीय समझते हैं ,</u>

्ड्सलिए, सूत्र मौद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई श्रीतिया नर्ग प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके हाणा भागारी प्रियम्बना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 968क साथ 9ढते हुए अधिसूचना सं. 11195 ली-श्रम-58-श्रम√57/11 -45. दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम-के में बिहु गठित अमें प्यायालय फरीवाबादको वियादसस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय विषय मिन्दिर करते हैं जो कि उक्त प्रवसकों तथा भामक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा

मेंगू गिरी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?